तर्ज- जब जब बहार आई

माया से तंग आकर,कर बैठे गर शिकायत
धनी आप माफ करना,पिया आप माफ करना

1- चाहते तो हम नहीं हैं माया में दिल लगाना
रहे दिल में प्यार तेरा लब पे यहीं तराना
लाचार हो दुखों से,पिया तुम ही हो ठिकाना

2- सेवा न की तुम्हारी और न ही कोई बंदगी
मोह माया में उलझ कर रह गई हमारी जिदंगी
न जागी न जगाया कोई कौल न निभाया

3- परदेस में है डेरा चंद रोज़ का हमारा
बेगानों के जहां में भला कैसे हो गुजारा
निसवत वोह अर्श वाली पल में भुला जो डाली

4- अंगना हैं हम तुम्हारी हमें आस भी तुम्हारी
जो दास्ताने ग़म है सुने कौन अब हमारी
माना गुनाह की मारी पर हैं तो हम तुम्हारी

Nijanand App